7

आज़ादी

आप कभी-कभी यह सोचते होंगे कि कितना अच्छा होता यदि आपको अपने ढंग से जीने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता। जब कभी आपको कोई टोकता है, तो आपको बुरा लगता होगा। आप शायद नाराज़ भी होते होंगे उस पर। आप पर किसी तरह का बंधन न होता, तो आप अपनी मर्ज़ी के मालिक होते। जैसा आप चाहते, वैसा कर पाते। जहाँ घूमना-फिरना चाहते, अपनी इच्छा के अनुसार कर पाते। लेकिन आप यह भी जानते हैं कि कुछ पाने के लिए मेहनत आवश्यक है। कुछ बनने के लिए अनुशासन ज़रूरी है। आज जिसे आप आज़ादी समझ रहे हैं, वह कल अनुशासन के अभाव में बंधन बन सकती है। किसी भी व्यक्ति के लिए आज़ादी के क्या मायने होते हैं? आज़ादी के संदर्भ में उसकी क्या-क्या जिज्ञासाएँ होती हैं? आइए, इन सवालों से परिचित होने के लिए मलयालम के प्रतिनिधि कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड की कविता का आनंद उठाएँ।

उद्देश्य

इस कविता को पढ़ने के बाद आप–

- आज़ादी के सीमित और व्यापक संदर्भों की व्याख्या कर सकेंगे;
- साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का आज़ादी से संबंध स्थापित कर सकेंगे;
- जीवन में अभिव्यक्ति के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- ज्ञान, कर्म, बलिदान और जीवन का कारण-कार्य संबंध स्पष्ट कर सकेंगे;
- आज़ादी के संदर्भ में 'श्रम और स्वप्न' तथा 'कर्त्तव्य और अधिकार' के संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-7.1

आप अपने पड़ोस में जाकर कुछ किशोरों को इकट्ठा कीजिए। उनकी पसंद-नापसंद के बारे में बातचीत कीजिए। बातचीत के क्रम में उनसे पूछिए कि उनके सपने क्या हैं? वे आगे चलकर क्या बनना चाहते हैं? उनकी कौन-सी समस्याएँ हैं? सूचनाओं को इकट्ठा कर लेने के बाद सामान्य समस्याओं का विश्लेषण कीजिए:

नाम	सपने	समस्याएँ
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

विश्लेषण: ....

....

....

7.1 मूल पाठ

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ते हैं। आपकी सुविधा के लिए कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

आज़ादी

''उस्ताद जी, आज़ादी क्या होती है?''
-पूछा दर्जी से उसके शागिर्द ने,
''क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती
रेलगाड़ी?
या अँधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी
कामना करता है
वह लैंपपोस्ट?
निश्चिंत नींद?

चित्र 7.1

शब्दार्थ

उस्ताद- गुरु
शागिर्द- शिष्य, चेला
चरागाह- पशुओं के चरने का स्थान
बछड़ा- गाय का बच्चा
दिशा- ओर, तरफ़
मुसाफ़िर- यात्री
लैंपपोस्ट- बिजली का खंभा
निश्चिंत- बेफ़िक्र, बिना चिंता के

या इस अनंत कपड़े, शाश्वत रूप से गतिमान पहिए
और कभी न रुकने वाली सुई से मेरी मुक्ति?''

दर्जी ने जवाब दिया:
''आज़ादी का मतलब है- भूखे को खाना
प्यासे को पानी
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।
आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,''
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

चित्र 7.2

मूल लेखक : बालचंद्रन चुल्लिक्काड
अनुवाद : असद ज़ैदी

शब्दार्थ

अनंत- असीम, जिसका अंत न हो
शाश्वत- नित्य, जो सदा बना रहे
मुक्ति- बंधन से छूटने की अवस्था या भाव
तनहाई- अकेलापन
महफ़िल- सभा, जलसा
पनाह- रक्षा, बचाव
कर्मठ- काम में लगे रहनेवाले
बलिदान - त्याग
बलिदानी- बलिदान करने वाला
उलझन- बाधा, समस्या, चिंता

7.2 आइए समझें

आइए, अब हम कविता के पहले अंश का भाव समझने के लिए इसे एक बार फिर से पढ़ लें।

7.2.1 अंश-1

जैसा कि आपने पढ़ा, इस कविता में दर्जी से उसके शागिर्द ने पूछा कि आज़ादी का क्या अर्थ है? इस सवाल के साथ-साथ शागिर्द ने अपनी ओर से कई संदर्भों का वर्णन करके आज़ादी का अर्थ जानना चाहा। उसने अपने गुरु के सामने यह जिज्ञासा रखी कि क्या चरागाह में नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाने, बेफ़िक्र और ख़ुश रहने अर्थात उच्छृंखलता का नाम आज़ादी है? दूसरा संदर्भ देते हुए शागिर्द कहता है- लगभग असंभव समझे जाने वाले काम को पूरा करने के दुस्साहस को आज़ादी कहा जा सकता है? सूरज में घोंसला बनाने के लिए उड़ान भरने वाली चिड़िया का काम कुछ ऐसा ही है। शागिर्द ने यह भी पूछा कि कहीं उत्तर दिशा में सीटी बजाते हुए तेज़ भागती रेलगाड़ी का नाम तो आज़ादी नहीं?

चित्र 7.3

यहाँ आपके मन में सवाल उठ सकता है कि रेलगाड़ी किसी अन्य दिशा में क्यों नहीं जा रही है? सिर्फ उत्तर दिशा की ओर क्यों? दरअसल, यह कविता मलयालम में लिखी गई है, जो केरल की भाषा है। कवि भारत के दक्षिणी हिस्से का है, इसलिए वह रेलगाड़ी उत्तर दिशा में भागने की बात का उल्लेख करता है। केरल से चलने वाली रेलगाड़ी केवल उत्तर दिशा की ओर ही जा सकती है, क्योंकि केरल की बाकी तीनों दिशाओं में समुद्र है।

चित्र 7.4

चित्र 7.5

वैसे यहाँ पर कवि शागिर्द के माध्यम से उस्ताद से प्रश्न करता है कि क्या सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आजादी है? वास्तव में कुछ लोग खासतौर पर बारह-तेरह वर्ष की उम्र के किशोर घूमने-फिरने, सैर-सपाटे को ही आजादी मानते हैं, इसलिए शागिर्द का यह प्रश्न अनुचित नहीं है। अपने अगले प्रश्न में शागिर्द पूछता है कि क्या अंधेरे में भटकने वाले को लैंपपोस्ट मिल जाए तो उसकी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं? इस प्रश्न को यों समझिए कि हम किसी यात्रा पर निकलें और यात्रा के दौरान अंधेरा हो जाए। अंधेरे में कहीं आश्रय मिल जाए और हम रुक जाएँ। क्या यह कुछ समय के लिए रुकना यात्रा का अंत हो सकता है? ठीक उसी प्रकार शागिर्द यह पूछ रहा है कि क्या मुसाफिर का अंधेरे में किसी लैंप पोस्ट के नीचे रुकना आजादी है? मंज़िल की प्राप्ति है? आज़ादी के बारे में अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए वह फिर पूछता है कि क्या निश्चिंत अर्थात् बेफ़िक्र होकर सो जाने का दूसरा नाम

चित्र 7.6

टिप्पणी

''उस्ताद जी, आज़ादी क्या होती है?''
-पूछा दर्जी से उसके शागिर्द ने।
क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती
रेलगाड़ी?
या अंधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी
कामना करता है
- वह लैंपपोस्ट?
निश्चिंत नींद?
या इस अनंत कपड़े, शाश्वत रूप से
गतिमान पहिए
और कभी न रुकनेवाली सुई से मेरी
मुक्ति?

आज़ादी है? इस तरह पाँच प्रकार के संदर्भों का उल्लेख करने के बाद कविता का मूल बिंदु सामने आता है। यहाँ शागिर्द के मन में जो प्रश्न उभरे हैं वे उसकी चिंतन-क्षमता को बता रहे हैं। शागिर्द अपनी मुक्ति या आज़ादी के बारे में पूछता है कि अनंत कपड़ों के ढेर, सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों, कपड़ों पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति पाने का नाम तो आज़ादी नहीं है? आशय यह है कि क्या कर्म से मुक्ति ही आज़ादी है? ज़रा सोचिए कि क्या आपके मन में भी देश में आज़ादी किस प्रकार की होनी चाहिए, इसके बारे में तरह-तरह के विचार नहीं आते? लेखक की आज़ादी की व्याख्या के बारे में आप क्या सोचते हैं?

टिप्पणी

- कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से यह पता चलता है कि हमारे समाज में आज़ादी को अनेक संदर्भों में देखा जाता है। कभी-कभी उन्मुक्तता, उच्छृंखलता, मनमर्जी, सैर-सपाटे, गैर-जिम्मेदारी, तात्कालिक तथा सीमित लाभ और कर्महीनता को ही आज़ादी मान लिया जाता है। ये सारे संदर्भ व्यक्तिगत और मामूली आनंद से प्रेरित हैं। आज़ादी का अर्थ ज़िम्मेदारी का भाव भी लिए है, जबकि उपर्युक्त संदर्भ गैर जिम्मेदारी लिए हुए हैं। शागिर्द अपने आस-पास आजादी के जितने संदर्भ देखता है, उनका वर्णन करते हुए उस्ताद से पूछता है कि क्या ये सब आजादी के विभिन्न रूप हैं, या आजादी कुछ और है।

क्रियाकलाप-7.2

- आपने कविता में 'अनंत' और 'गतिमान' शब्दों को पढ़ा। उनमें पहले शब्द 'अनंत' में अन् उपसर्ग लगा है जबकि दूसरे शब्द गतिमान में 'मान' प्रत्यय है। यानी कुछ शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, आइए, शब्द-निर्माण के बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करें।

1. शब्द निर्माण का कार्य उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास के माध्यम से किया जाता है।

   (i) उपसर्ग उन्हें कहते हैं जो शब्द के पहले लगते हैं और अर्थ को बदल देते हैं; जैसे:– 'हार' शब्द के पहले 'उप' लगकर उपहार बन जाता है।

   आपने देखा कि 'हार' शब्द में प्र (प्रहार), आ (आहार), वि (विहार) आदि लग जाने से शब्द भी नया शब्द बन गया और अर्थ में परिवर्तन आ गया।

   (ii) शब्द निर्माण का दूसरा आधार है– प्रत्यय।

   प्रत्यय शब्द के पीछे लगता है और अर्थ में परिवर्तन कर देता है।

   जैसे– मूर्ख + ता = मूर्खता, वर्ष + इक = वार्षिक।

(iii) तीसरा आधार है संधि।

दो वर्णों के मेल को संधि कहा जाता है; जैसे–

सूर्योदय, इत्यादि, विद्यालय, चंद्रोदय। इनका विच्छेद होगा–सूर्य + उदय, इति + आदि, विद्या + आलय, चंद्र + उदय।

(iv) चौथा आधार है समास:

दो शब्दों के मेल को समास कहते हैं, जैसे रसोईघर, पीतांबर, माता-पिता, रेलगाड़ी। इनका विग्रह होगा- रसोई के लिए घर, पीला है अंबर जिसका, माता और पिता, रेल पर चलने वाली गाड़ी।

2. शब्द-भंडार :- शब्द-भंडार में पर्यायवाची, विलोम शब्द, एकार्थक, अनेकार्थक, वाक्यांश के लिए एक शब्द आते हैं। कविता को समझने के लिए शब्द निर्माण तथा शब्द भंडार दोनों जरूरी हैं।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए :

(क) उपसर्ग छाँटिए

पराभव, अनुशासन, बेवजह, प्रत्युत्तर

....

(ख) प्रत्यय छाँटिए :

साप्ताहिक, खटिया, गरमाहट

....

(ग) संधि-विच्छेद कीजिए :

पुस्तकालय, सूर्योदय, अत्यंत, प्रत्युत्तर

....

(घ) विग्रह कीजिए :

देश प्रेम, दही-बड़ा, दाएँ-बाएँ, चतुर्भुज

....

टिप्पणी

7.2.2 अंश-2

आइए, अब हम पाठ के दूसरे अंश को समझने से पहले उन्हें पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ लें जो हाशिए में दिया गया है।

आपके मन में यह जिज्ञासा अवश्य होगी कि शागिर्द के प्रश्न का दर्जी ने क्या उत्तर दिया। शागिर्द के सवाल को दर्जी ने ध्यानपूर्वक सुना। दर्जी के पास गहरे अनुभव हैं। उसने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि मूलभूत, अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। मूलभूत ज़रूरतें हैं– रोटी, कपड़ा और मकान। भूखे को खाना, प्यासे को पानी, ठंड से पीड़ित के लिए राहत पहुँचाने वाले ऊनी वस्त्र, थके-माँदे के लिए बिस्तर ही आज़ादी है।

दर्जी ने जवाब दिया:
''आज़ादी का मतलब है- भूखे को खाना
प्यासे को पानी
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।
आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

इसके बाद दर्जी ने शागिर्द से कहा कि आज़ादी एक अभिव्यक्ति है जिसका माध्यम शब्द है। क्या आप जानते हैं कि शब्द या अभिव्यक्ति का आज़ादी से क्या संबंध है। जो हमें उचित या अनुचित लगता है और हम उसे सच्चाई से शब्दों में अभिव्यक्त न कर पाएँ तो हम स्वतंत्र नहीं है, इसलिए हमारे समाज और देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात प्रायः की जाती है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि जो हमें ठीक लगे और जिसे कहना समाज-हित में आवश्यक हो, वह हम अवश्य कहें। इसके लिए कभी-कभी साहस भी करना पड़ता है। शिकारी के लिए तीर के कमान आज़ादी एक साधन है। शिकारी का तो अस्तित्व ही नहीं है यदि उसके पास तीर न हो तो। कवि यहाँ पर कहना चाहता है कि जीवन के लिए अनिवार्य साधन का होना भी आज़ादी है। अकेलेपन के कष्ट से मुक्त होना, भय से मुक्त होना भी आज़ादी है।

अगली पंक्तियों में कवि ने ज्ञान, कर्म और बलिदान के कार्य-कारण संबंध को स्पष्ट किया है। ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। अज्ञानी के लिए ज्ञान प्राप्ति ही आज़ादी है। कहा भी जाता है कि ज्ञान हमें मुक्त करता है। यहाँ मुक्त करने का आशय है- सोचने-विचारने की क्षमता को विस्तार देना, ऐसा विस्तार जो व्यक्ति को संकीर्ण या ओछी बातों से मुक्त करके विशाल-हृदय वाला बनाता है। लेकिन ज्ञान कभी निष्क्रिय नहीं बनाता। ज्ञान को कर्म में बदलना भी ज़रूरी है। यदि हम ज्ञान को कर्म में नहीं बदलेंगे तो ज्ञान निरर्थक एवं आंतरिक ही रहेगा उसका लाभ दूसरों को नहीं मिल पाएगा। ज्ञान को कर्म में बदलने वाले को ही कर्मठ कहा जाता है। आप जानते ही हैं कि हमारे देश की आज़ादी के लिए जो महान् लोग लड़े थे उन्हें पहले यह ज्ञान हुआ था कि हम गुलाम हैं, हमें आज़ाद होना चाहिए, इसके बाद वे इस

ज्ञान के आधार पर सक्रिय हुए और देश आजाद हुआ। इसके लिए उनमें से बहुतों ने कई तरह से त्याग-बलिदान किया। किसी ने घर-बार छोड़ा, कोई जीवन-भर जेल में यातना सहता रहा, कोई फाँसी पर झूल गया। कर्मठ को बलिदान, त्याग ही आज़ादी प्रतीत होता है। ज्ञान, कर्म और त्याग को कवि ने अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया है क्योंकि बलिदान करने वाले कभी मरते नहीं, वे सदैव जीवित रहते हैं, वे दूसरों को जीवन देते हैं और उनके द्वारा निरंतर याद किए जाते हैं।

टिप्पणी:-

उस्ताद द्वारा शागिर्द को दिए गए उत्तर को पढ़कर आज़ादी के विषय में आपके जो विचार हैं, उनका विस्तार हुआ होगा। आपको पता चला होगा कि आज़ादी बेकार की उछल-कूद, उन्मुक्तता, स्वच्छंदता में या यह मान लेने में नहीं है कि मैं चाहे जो करूँ। आज़ादी इसमें भी नहीं है कि हम ख़याली पुलाव पकाते रहें अर्थात् बेकार की कल्पनाएँ करते रहें। इधर-उधर, निश्चिंत होकर घूमना और मान लेना कि यह आज़ादी है- भ्रम है। हमारे समाज में कुछ लोग ऐसी ही गतिविधियों को आज़ादी मानते हैं। इसीलिए शागिर्द के मन में आज़ादी के विषय में जिज्ञासा हुई और उसने इसके समाधान के लिए अपने अनुभवी उस्ताद की शरण ली। शागिर्द को और हमें भी यह पता चला कि आज़ादी जीवन की अनिवार्यताओं से है। आज़ादी का अर्थ केवल अधिकारों को भोगना ही नहीं, बल्कि समाज तथा देश के प्रति कर्त्तव्य निभाना भी है।

पाठगत प्रश्न-7.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाना' से कवि का क्या आशय है?
   - (क) भयभीत होकर जीना ☐
   - (ख) उन्मुक्त और उच्छृंखल होना ☐
   - (ग) इच्छित को प्राप्त करना ☐
   - (ग) दिशाज्ञान प्राप्त करना ☐
2. अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख होने का आशय है–
   - (क) बंधन से छुटकारा पाना ☐
   - (ख) अज्ञान से ज्ञान की ओर जाना ☐
   - (ग) अँधेरे में दीपक जलाना ☐
   - (घ) सूर्योदय की दिशा में जाना ☐
3. निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में 'ई' प्रत्यय नहीं है।
   - (क) ज्ञानी ☐
   - (ख) दानी ☐

टिप्पणी

(ग) पानी ☐ (घ) धानी ☐

4. आज़ादी का मतलब है–

(क) कुछ भी करने की छूट ☐ (ख) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति ☐

(ग) उच्छृंखलता और स्वच्छंदता ☐ (घ) कर्म से मुक्ति ☐

5. आज़ादी किसके लिए क्या है– एक रेखा खींचकर मिलान कीजिए:

भयभीत	ज्ञान
जीवन	तीर
शिकारी	बिस्तर
तनहाई	बलिदान
अज्ञानी	पनाह
थका-माँदा	महफ़िल

7.2.3 अंश-3

आइए, अब हम कविता के अंतिम अंश को ठीक से समझने से पहले एक बार फिर पढ़ लें।

पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,''
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े
सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

आपने जाना कि आज़ादी का व्यापक अर्थ है। कविता के इस तीसरे अंश में दर्जी यानी उस्ताद ने आज़ादी को कर्म से जोड़ा है। कपड़े सीने का उल्लेख करते हुए दर्जी ने कर्म की ओर संकेत किया है। कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कहने का आशय यह है कि जो परिश्रम करेगा उसी के सपने पूरे होंगे। सुई की चमकदार नोंक पर आज़ादी टिकी हुई है अर्थात् कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। कपड़े सिए जायेंगे, सुई चलती रहेगी यानी कर्म जारी रहेगा, तो आज़ादी बनी रहेगी। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्म का सर्वाधिक महत्त्व है। क्या आप समझ पा रहे हैं कि इस अंश में उस्ताद ने आजादी का संबंध सबसे पहले सुई की नोंक से क्यों जोड़ा है? शागिर्द के प्रश्नों में अंतिम प्रश्न क्या था, याद कीजिए। शागिर्द का अंतिम प्रश्न था कि क्या इस कपड़े सीने वाली मशीन और सुई से मेरी मुक्ति आजादी है, अर्थात् कर्म से मुक्ति आजादी है? कभी-कभी निरंतर काम करते हुए हम भी थक जाते हैं और सोचते हैं- बस! अब और काम नहीं, लेकिन यह आराम की स्थिति कुछ देर की स्थिति है। हम फिर काम में लग जाते हैं। कर्म को हमेशा के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। यही बात तो उस्ताद भी कह रहे हैं, कर्म करना आज़ादी है।

उस्ताद का यह मत है कि जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। यह बात अनेक प्रकार के उदाहरण देकर कहता है। कड़ी मेहनत करके धूप,

बारिश, जाड़ा सहने के बाद किसान के खेत में फसल लहलहाती है। उस फसल को काटने का अधिकार केवल किसान को ही मिलना चाहिए। रोटी उसे ही मिलती रहनी चाहिए, जो उसके लिए मेहनत करता है। ऐसा न हो कि मेहनत कोई करे और खाए कोई और। बोए कोई और काटे कोई और। श्रम का उचित फल मिलना चाहिए। यह उचित फल आज़ादी का पर्याय है। इसके साथ-साथ आज़ादी का दूसरा नाम कर्म है। कर्म ही आज़ादी है और पारिश्रमिक का उचित फल प्राप्त होना ही आज़ादी है। इस प्रकार आज़ादी का वास्तविक अर्थ, उसके विविध संदर्भ और श्रम तथा कर्त्तव्य के साथ उसके संबंध को स्पष्ट करते हुए दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा। यहाँ पर उस्ताद का फिर से कपड़े सीने में लग जाना, निरंतर कर्म करते रहने का संदेश देता है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हुई। वह भी सुई में धागा पिरोने लगा उसकी समस्या का समाधान हो गया और उसने पुनः कर्मरत होने का निर्णय ले लिया। आज़ादी को जीवित रखने के लिए श्रम परम आवश्यक है, यह आप भी समझ गए होंगे।

टिप्पणी

- भारत में कभी यह भी होता था कि किसान परिश्रम करता था, खेत जोतता था, उसे सींचता था, खेत की रखवाली करता था, लेकिन फसल पकने पर उसे कोई ताकतवर लोग काटकर ले जाते थे। भारत जब गुलाम था तब भी भारतीयों के श्रम से उत्पन्न वस्तुओं को शासक अंग्रेज ले जाते थे। स्वाधीनता के बाद भी कहीं-कहीं यह स्थिति बनी रही कि कुछ लोगों को श्रम का उचित फल नहीं मिला, इसलिए उन्हें वास्तविक आज़ादी नहीं मिली। इसलिए जनकवि अदम गोंडवी ने आज़ादी के बारे में कहा है-

  सौ में अस्सी फ़ीसदी जो आज भी नासाज़ हैं
  दिल पर रखकर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है?

- कर्त्तव्य एवं अधिकार सिक्के के दो पहलू हैं। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्त्तव्य का स्थान महत्त्वपूर्ण है।
- आज़ादी केवल राजनीतिक ही नहीं होती, उसके सामाजिक तथा आर्थिक पहलू भी हैं।

क्रियाकलाप-7.3

पाठ में 'सकेगा' और 'सकता' क्रियाओं के प्रयोग देखे जा सकते हैं, जैसे बोनेवाला ही काट सकता है, सपने भी नहीं देख सकेगा आदि। दरअसल, 'सकना' क्रिया का प्रयोग अनेक अवसरों पर, अनेक रूपों में किया जा सकता है, जिनमें प्रमुख हैं:

अनुमति माँगने के रूप में - क्या मैं भी चल सकता हूँ?

संभावना को व्यक्त करने के लिए - तीन दिन में यह काम हो सकेगा।

अशक्तता या क्षमता को बताने के लिए - वह बीमार है, इसलिए चल नहीं सकेगा।

आशा की अभिव्यक्ति के लिए- एकजुट होकर दुनिया को बदला जा सकता है।

आग्रह को व्यक्त करने के लिए - यदि मेरे साथ चल सकें, तो बड़ी कृपा होगी।

अब आप भी उपर्युक्त स्थितियों को व्यक्त करने वाले ऐसे पाँच वाक्य लिखिए;

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

7.4 भाव-सौंदर्य

कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है। चूँकि इस जिज्ञासा का संबंध पाठक से भी है, इसलिए यह कविता उसे आकर्षित करने की क्षमता रखती है। कविता प्रश्नों और उनके उत्तरों की शृंखला स्थापित करती है और इस शृंखला के अनुकूल लयात्मकता बनी है जो आज़ादी की वास्तविकता को स्थापित करती है। कविता में यह संदेश बहुत ही प्रभावशाली ढंग से दिया गया है कि आज़ादी या मुक्ति का अर्थ उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख नहीं, बल्कि आज़ादी का संबंध श्रम, त्याग और बलिदान से है। आज जिस आज़ादी को हम भोग रहे हैं, उसके पीछे भी असंख्य लोगों का त्याग-बलिदान छिपा है। उनके त्याग-बलिदान ने हमें जीवन दिया है। वे हमारे भीतर जी रहे हैं। इसके साथ-साथ कविता उन लोगों को अधिकार दिलाने की बात करती हैं जो श्रम करने के बावजूद इन अधिकारों से वंचित हैं। इस स्थापना के माध्यम से कवि अपने उन सभी पाठकों को एक दिशा देता है जो आज़ादी को एकांगी, निरपेक्ष और व्यक्तिगत समझते हैं। आज़ादी और कर्त्तव्य अर्थात् श्रम के महत्त्व को जानकर ही शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह काम में लग जाता है। यह कविता प्रत्येक पढ़ने वाले को भी प्रभावशाली ढंग से यह प्रेरणा देती है।

7.5 भाषा-सौंदर्य

- कविता की भाषा सरल और सहज है। शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं।
- कविता में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उस्ताद, दर्जी, शागिर्द, तनहाई, पनाह आदि शब्द फ़ारसी मूल के हैं, तो मुसाफ़िर, महफ़िल आदि शब्द अरबी भाषा के हैं। लैंपपोस्ट शब्द अंग्रेजी भाषा का है।

टिप्पणी

- **चमकीली** नोंक, **अनंत** कपड़े, **गतिमान** पहिए, **नन्हा-सा** बछड़ा आदि में विशेषणों का सुंदर प्रयोग हुआ है।
- आप जान चुके हैं कि यह कविता बालचंद्रन चुल्लिक्काड ने मूल रूप से मलयालम भाषा में लिखी है। इसका हिन्दी में अनुवाद कवि असद ज़ैदी ने किया है। भाषा-शैली के स्वाभाविक प्रयोग के कारण यह कविता अनूदित होकर भी मूल रचना की तरह आनंद प्रदान करती है।

पाठगत प्रश्न-7.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'जो कपड़े नहीं सिएगा' पंक्ति किसकी ओर संकेत करती है:

   (क) दर्जी के शागिर्द की ओर ☐

   (ख) कर्त्तव्य-पालन करने वाले की ओर ☐

   (ग) फटे-पुराने कपड़े सीने वाले की ओर ☐

   (घ) मस्ती में जीने वाले की ओर ☐

2. दर्ज़ी एक प्रकार का व्यवसाय है। नीचे दिए शब्दों में कौन-सा व्यवसाय नहीं है?

   (क) बढ़ईगिरी ☐ (ख) डॉक्टरी ☐

   (ग) कारीगरी ☐ (घ) राजगिरी ☐

3. दर्ज़ी के अनुसार आज़ादी को भोगने का अधिकार किसे होना चाहिए?

   (क) जो निरंतर कर्म करता है ☐

   (ख) जो देश का नागरिक है ☐

   (ग) जो देश से प्रेम करता है ☐

   (घ) जो सरकार की नौकरी करता है ☐

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए:

   अनंत, गतिमान, शिकारी, अज्ञानी, चमकीली, बोनेवाला

आपने क्या सीखा

- 'आज़ादी' शीर्षक कविता मूलरूप से मलयालम में लिखी गई है। इसके कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड हैं। इसका हिंदी अनुवाद असद ज़ैदी ने किया है।

आज़ादी

- आज़ादी केवल राजनीतिक नहीं होती। इसके अनेक संदर्भ और अर्थ हैं।
- आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्त्तव्य अथवा कर्म के महत्त्व को भी जानना होगा। काम-धाम से छुटकारा पाना आज़ादी का लक्ष्य नहीं है।
- दर्जी के जवाब में उसके लंबे अनुभव और व्यापक चिंतन क्षमता का परिचय मिलता है। दर्जी और शार्गिद के बहाने आज़ादी के सही मायने बताए गए हैं।
- कविता की भाषा सरल और सहज है।
- अनुवाद मूल रचना का स्वाद प्रदान करती है।

योग्यता-विस्तार

- इस कविता के कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड हैं। उनका जन्म 1958 में हुआ था। आप मलयालम साहित्य के चर्चित रचनाकार हैं। 'अमावसी', 'पतिनेटु', 'कवितकव्व' आदि आपकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। साहित्य के अलावा अभिनय तथा निर्देशन के क्षेत्र में भी बालचंद्रन चुल्लिक्काड एक उल्लेखनीय नाम है। पत्रकारिता में आपको विशेषज्ञता हासिल है।

  भारत की स्वाधीनता के बाद अनेक हिंदी कवियों ने देश की आज़ादी को झूठी आज़ादी कहा, क्योंकि आज़ादी के बाद जनता के बहुत बड़े हिस्से के लिए मूलभूत चीजें दुर्लभ रहीं। इस आशय की कविताएँ लिखने वालों में धूमिल का नाम महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में उनका कविता-संग्रह 'संसद से सड़क तक' पठनीय है।

पाठांत प्रश्न

1. शागिर्द ने अपने सवाल 'आज़ादी क्या होती है' के दौरान् कुछ जिज्ञासाएँ व्यक्त की थीं। क्या उन जिज्ञासाओं के साथ आप कुछ और जिज्ञासाएँ जोड़ सकते हैं? यदि हाँ, तो लिखिए।
2. क्या आज़ादी का संबंध कर्म से है? कैसे? समझाकर लिखिए।
3. आपकी दृष्टि में आज़ादी का सही अधिकारी कौन है और क्यों?
4. अपनी आज़ादी को लेकर आप भी परिवार में कई बार तनावग्रस्त हुए होंगे। आप तनावमुक्त कैसे हुए, उसका उल्लेख कीजिए।
5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए

   पर जो कपड़े नहीं सिएगा
   सपने भी नहीं देख सकेगा
   सुई की चमकीली नोंक पर
   टिकी है आज़ादी।

टिप्पणी

6. अपने परिवेश से उदाहरण देते हुए ज्ञान, कर्म और बलिदान के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कीजिए।

7. 'बलिदानी को जीवन' का आशय स्पष्ट कीजिए।

8. शागिर्द ने सुई में धागा पिरोने का निर्णय क्यों ले लिया?

9. निम्नलिखित कविता को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

    हम पंछी उन्मुक्त गगन के
    पिंजरबद्ध न गा पाएँगे
    कनक तीलियों से टकराकर
    पुलकित पंख टूट जाएँगे!

    स्वर्ण–शृंखला के बंधन में
    अपनी गति उड़ान सब भूले
    बस सपने में देख रहे हैं
    तरु की फुनगी पर के झूले।

    1. पंछी पिंजरबद्ध होकर क्यों नहीं गा पाते?
    2. पंछी पंख टूटने की आशंका क्यों जताता है?
    3. पंछी सपने में क्या देखता है?
    4. इन पंक्तियों का कोई उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

7.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

5. भयभीत – पनाह, जीवन – बलिदान, शिकारी – तीर, तनहाई – महफ़िल, अज्ञानी – ज्ञान, थका–माँदा – बिस्तर।

7.2 1. क 2. ग 3. क

4. अनंत – 'अन्' उपसर्ग
   गतिमान – 'मान' प्रत्यय
   शिकारी – 'ई' प्रत्यय
   चमकीली – 'ईला' और 'ई' प्रत्यय
   (चमक ---> चमकीला ---> चमकीली)
   बोनेवाला – 'वाला' प्रत्यय